Volume : 3 | Issue : 3 | March 2014 • ISSN No 2277 - 8160

Research Paper Music

Shastriya Sangit ke Prachar hetu Bandise ke Madhayam

Tajinder Singh Asst. Prof, dept of Music, Akal Degree College, Mastuana Sahib, Sangrur, Punjab, INDIA

KEYWORDS :

शास्त्रीय संगीत के प्रचार हेतू बंदिशें के माध्यम

'बंदिश' का अर्थ तो इसका नाम देखते ही स्पष्ट हो जाता है। साधारणतः बंदिश ऐसी सुन्दर काव्य रचना को कहा जाता है जो स्वर तथा ताल बद्ध हो। 'नालन्दा विशाल शब्दसागर' में बंदिश का अर्थ इस प्रकार बताया गया है। ''बंदिश संज्ञा स्त्री) 1. बांधने की किया का भाव 2. पहले से किया हुआ प्रबन्ध 3. गीत, कविता आदि की शब्दायोजना''[प]

डा.सुनन्दा पाठक लिखती है कि ''बंदिश का अर्थ है, बंधी हुई रचना। जो गीत, अथवा स्वर रचना, स्वर एवं छंद में समान भाव से बंधी हुई हो उसे बंदिश कहा जाता है।''[पप] धर्मपाल जी बंदिश की परिभाषा इस प्रकार बताते हैं। ''स्वर, ताल और पद्ध में सुबद्ध और सुनियोजित रचना को 'बंदिश' शब्द कहते हैं।''[पपप]

उपयुक्त प्रमाणों से यह सिद्ध हो जाता है कि बंदिश ऐसी खूबसूरत साहित्कि रचना को कहा जाता है जो किसी राग के स्वरों व ताल में निबद्ध हो। शास्त्रीय संगीत में बंदिशों के कई प्रकार मिलते हैं, जो इस प्रकार हैं।

ख्यालः -'ख्याल' फारसी भाषा का शब्द है। जिस का अर्थ है कल्पना। ''राग नियमों का पालन करते हुए अपनी इच्छा यां कल्पना के अनुसार विविध आलाप तानों का विस्तार करते हुए एवं राग का स्वरूप स्थापित करते हुए गाना ही 'ख्याल' है।''[पअ]

डा.सत्यवर्ती शर्मा लिखती हैं कि ''ख्याल का अर्थ यथेच्छाचार्य भी हो सकता है। संगीत में यही अर्थ युक्ति-युक्त होगा'[अ] आधुनिक समय में राग का गायन अधिक ख्याल गायन शैली में ही होता है। ख्याल के मुख्यता दो भाग स्थाई व अंतरा होते हैं। जिन्हें विभिन्न प्रकार के आलाप, तान, खटना मुर्की इत्यादि ऋंगारिक तत्वों से सजाया जाता है। लय के आधार पर ख्याल को हम तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं।

1.विलम्बित ख्याल 2.मध्य ख्याल 3.द्रुत ख्याल

धुपदः - धुपद को धुवपद भी कहा जाता है। जिसका अर्थ है ''जो परिवर्तित न किया जा सके अतः धुपद का शाब्दिक अर्थ हुआ वह पद जो निर्धारित और निश्चित है।''[अप] प्राचीन काल में प्रबन्ध गान प्रचलित था। माना जाता है कि इसी गायन शैली में कुछ फेर बदल कर धुपद का आविष्कार किया गया।''धुपद की रचना भी प्रबन्ध के अंगों के आधार पर की गई है। प्रबन्ध और धुवपदों में पिता-पुत्र का सम्बन्ध है।''[अपप] धुपद के चार भाग स्थाई, अंतरा, संचारी व आभोग होते हैं। जिसकी अधिकतर रचना संस्कृत व बृज भाषा में मिलती है। आचार्य बृहस्पति जी लिखते है। ''धुवपदों में देवताओं और महांपुरषों की स्तुतियां होती थी।''[अपपप] धुपद अधिकतर वीर, शांत, गंभीर और ऋंगार रस प्रधान होते हैं। धुपद का गायन चारताल, सूलताल, झपताल, तीवा, बहम तथा रूद्ध ताल में किया जाता है। धुपद का गायन करने वाले कलाकारों को कलावंत अथावा धुपदिये कहा जाता है। यह शब्द प्रधान गायकी है। धपद गायन के लिए फेफडों का जोर अधिक लगने से इसे मर्दाना गायकी भी कहा जाता है।

धमारः -धमार को होली अथावा होरी भी कहा जाता है। इस गायन शैली में श्री कृष्ण जी और राधा जी के होली खेलने तथा कृष्ण जी व गोपियों की फागुन मास की राग लिलायों का वर्णन मिलता है। इस शैली का गायन अधिकतर धमार ताल में ही किया जाता है। इसी वजह से इसको धमार भी कहा जाने लगा। ''होली सम्बन्धी शब्दों से युक्त, धुपद अंग की गायन शैली को धमार कहते हैं जो धमार ताल में निबद्ध हो।''[पग] ''होली दो अंग से गाई जाती है, एक धुपद अंग से और दूसरी ख्याल या ठुमरी अंग से।

धुपद की तरह गाई जाने वाली होली प्रायः धमार ताल में रची होती है, अतः धमार से होली का अर्थ लिया जाता है। ख्याल अंग की होली दीपचन्दी ताल में गाई जाती है। होली के अनेक गीत तीनताल कहरवा ताल इत्यादि में भी होते हैं।''[ग] यह गायन शैली आलाप प्रधान है। ख्याल की तरह इस में तानों का प्रयोग नहीं किया जाता है। ''गायक जब इसमें धुपद शैली के अनुसार आड़, कुआड़ इत्यादि का काम दिखाने लगते हैं तब एक ओर से तो इसकी सरस शब्द रचना और आकर्षक आलापों से हृदय को संतोष प्राप्त होता है तथा दूसरी ओर लय के चमत्कार से बुद्धि भी चमत्कृत होती है।''[गप] ''दीपचन्दी ताल की होली गाने में कभी कभी गीत के शब्दों को लय और ताल बदल कर तीनताल यां कहरवा में भी गाते है और फिर दीपचन्दी में लौट आते है। यह कृत्य भी मनोरंजक होता है। ऐसा करने से गायन में थोड़ा ठुमरी और कव्वाली का अंग आ जाता है, जो जनसाधारण की अभिरूचित तथा महफिल के वातावरण के अनुकूल होता है।''[गपप] यह गायन शैली ऋंगार रस से ओत प्रोत है।

सादराः -''यह गीत विधा धुपद धमार अंग की ही है परन्तु यह झपताल में सुबद्ध होती है। इसमें लयकारी दिखाने का भी रिवाज है। इसके इलावा आड़ी तिरछी कोल बोल बाँट भी इसमें अच्छी लगती है। धुपद और धमार गाने के लिऐ जिस प्रकार गला सुरीला व दमदार होना चाहिऐ उसी प्रकार सादरा गाने के लिऐ भी रोबीला व जोरदार होना चाहिऐ।''[गपपप]

सादरा में स्वर, राग की शुद्धता, साहित्य का स्पष्ट उच्चारण इस गायन शैली की विशेषता है। यह अधिकतर झपताल में ही गाया जाता है परन्तु कुछ एक सादरे सूलताल में भी गाये जाते हैं। सादरा मुख्यातः दो अंगों धुपद अंग तथा ख्याल अंग से गाया जाता है। धुपद अंग से गाये जाने वाले सादरे का धुपद की तरह चार भार स्थाई, अंतरा, संचारी, आभोग होते हैं। जिसमें धुपद की तरह लयकारी व गमक का खूब प्रयोग होता है तथा ख्याल अंग से गाये जाने वाले सादरे में ख्याल की भांति दो भाग स्थाई व अंतरा होते हैं जिसमें ख्याल की तरह तानें इत्यादि का प्रयोग किया जाता है।

त्रिवटः -इसे तिरवट अथवा त्रिवट भी कहा जाता है। जब किसी ख्याल में ख्याल के बोलों की जगह तबले अथवा पखावज के बोलों का प्रयोग कर गाया जाऐ, जो इस प्रकार की गायन शैली को त्रिवट कहा जाता है। त्रिवट में पखावज यां तबले के बोलों को किसी राग में बांध कर गाते हैं।''[गपअ] यह किसी भी राग में गाया जा सकता है। त्रिवट की गायकी को काफी कठिन माना जाता है। इसका गायन तीनताल तथा एकताल में किया जाता है। द्रुत लय में इसका गायन किया जाता है।

चतुरंगः -''चतुरंग का अर्थ है चार अंग।'' गायन के उस प्रकार को चतुरंग कहा जाता है जिसमें किसी राग की बंदिश के अर्न्तगत चारों अंगों, ख्याल में प्रयुक्त होने वाले, तबले यां पखावज, सरगम तथा तराने के बोल शामिल हों। इसी चार अंगों का सूमेल होने के कारण ही गायन की इस शैली को 'चतुरंग' कहा जाता है। ख्याल की भांति इस के भी दो भाग स्थाई व अंतरा होते हैं। ''यह प्रायः द्रुत ख्याल की शैली में गाया जाता है। इसमें छोटे छोटे आलाप, बोल आलाप, बहलावे के आलाप तथा तानें ली जाती हैं।''[गअ]

तरानाः -तराना का गायन भी ख्याल की तरह ही होता है। फर्क सिर्फ साहित्य का ही है। तराना गायन में तान, ता रे, दा नी दीम इत्यादि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। पंडित भोलादत जोशी भी लिखते हैं कि ''ओद तानादेरे नारे दीम त न न दिर दिर दानि यललि लोम इत्यादि अर्थ विहीन शब्दों में जब कोई ख्याल गाया जाता है तो उसे

तराना कहते हैं।''[गअप] तराना गायन शैली के उदय के विषय में कुछ विद्धानों का मानना है कि तराना अमीर खुसरों ने ईजाद किया, परन्तु शंकर लाल मिश्र अपनी पुस्तक नवीन ख्याल रचनावली में पाकिस्तानी लेखक रशीद मालिक का प्रमाण देते हुए लिखते हैं कि ''कव्वाली और तराना अमीर खुसरों से बहुत पहले की चीज है।''[गअपप]

'तराना' को भारतीय शास्त्रीय संगीत की बहुत प्राचीन गायन शैली माना जाता है, जिसमें संस्कृत के तू ही अनन्त हरि' इत्यादि श्लोकों का उच्चारण किया जाता था परन्तु विद्धानों के मतों के अनुसार जब मुस्लमान संगीतज्ञ भारत आऐ तो संस्कृत का उच्चारण उनकी समझ में न आने की वजह से उन्होने ता ना दीम तू दा नी इत्यादि बोलों का उच्चारण कर, इसका गायन करने लगे।

आज भी कुछ तराने अर्थ सहित प्राप्त होते हैं। शंकर लाल मिश्र ने तराने के बोलों का अर्थ देते हुए एक तराना अपनी पुस्तक ''नवीन ख्याल रचनावली' में दिया है।

इस गायन शैली का गायन अधिकतर तीनताल, एकताल तथा झपताल में किया जाता है। तराने का गायन प्रायः मध्य लय से प्रारम्भ कर द्रुत अथवा अतिद्रुत लय में सर्मापत किया जाता है। कुछ एक तरानों में तबले के बोलों का भी प्रयोग किया जाता है। यह किसी भी राग में गाया जा सकता है।

लक्षणगीतः -जब किसी राग में साहित्य की जगह राग के लक्षण अर्थात उसके स्वर, वादी-संवादी, समय, जाति, वर्जित स्वर, स्वर लगाव इत्यादि के बार में बताया जाये। इस शैली को लक्षणगीत कहा जाता है। यह भी ख्याल की भांति ही गाया जाता है। यह अधिकतर मध्य लय में ही गाया जाता है।

''कोई गीत जब किसी राग में गाया गया हो और उस गीत के शब्दों में उस राग का वादी-संवादी यां वजित स्वरों का वर्णन किया गया हो, तो उसे लक्षण-गीत कहते हैं। लक्षण-गीत से राग सबंधी अनेक बातें सरलतापूर्वक याद हो जाती है।[गअपपप]

ख्याल, धुपद, धमार, सादरा, तराना, त्रिवट, चतुरंग, लक्षणतीग इत्यादि ये सब बंदिशों के ही माध्यम है। बंदिश ही राग का वह स्वरूप है जिसमें राग के सभी गुण निहित होते हैं। इसी से राग का चलन, वादी-संवादी, जाति, भाव, रस, प्रकृति तथा स्वरूप सामने आता है। अगर किसी बंदिश का गहनता से अध्ययन किया जाये तो राग के विष्य में समस्त जानकारी प्राप्त हो जाती है। जिससे राग के सभी लक्षण स्वयं ही प्रगट हो जाते हैं। इस लघु शोध कार्य में भैरव थाट के अन्तर्निहित औडव जाति की बंदिशों पर शोध कार्य किया गया है। उन रागों में खोज की गई प्रचलित, अल्प प्रचलित तथा अप्रचलित बंदिशों का सौन्दर्यपरक अध्ययन साहित्य, स्वर तथा ताल पक्ष के आधार पर इस तरह किया जा रहा ळें

REFERENCES

i नालन्दा विशाल शब्दसागर, पृष्ठ-941

पप डा.सुनन्दा पाठक, संगीतार्णव, पृष्ठ-93

पपप धर्मपाल, किराना घराने की गायकी व बंदिशों का मूल्यांकन, पृष्ठ-148

iv डा. सत्यवर्ती शर्मा, ख्याल गायन शैली, विकसित आयाम, पृष्ठ-77

अ वही

अप डा.मृदुला पुरी, संगीत मीमांस, पृष्ठ-88

अपप डा.सत्यवर्ती शर्मा, ख्याल गायन शैली विकसित आयाम, पृष्ठ 68

अपपप आचार्य बृहस्पति, संगीत चिंतामणि, पृष्ठ-51

ix डा.मृदुला पुरी, संगीत मीमांस, पृष्ठ- 96

ग पंडित भोलादतत जोशी, संगीत शास्त्र तथा राग माला, पृष्ठ-115

गप डा.उमा मिश्रा, काव्य और संगीत का पारस्परिक सम्बन्ध, पृष्ठ-89

गपप पंडित भोलादतत जोशी, संगीत शास्त्र तथा राग माला, पृष्ठ-115

गपपप डा.सत्यवर्ती शर्मा, ख्याल गायन शैली विकसित आयाम, पृष्ठ-78

xiv पंडित भोलादत्त जोशी, संगीत शास्त्र तथा राग माला, पृष्ठ-118

गअ वही

गअप पंडित भोलदत्त जोशी, संगीत शास्त्र तथा राग मात्रा, पृष्ठ-117

गअपप शंकर लाल मिश्रा सुभरंग, नवीन ख्याल रचनावली, पृष्ठ 380

xviii वसंत, संगीत-विशारद,पृष्ठ- 238